खंड: 4, अंक: 9 सितंबर 2021

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत
समसामयिक सरोकार एवं संभावनाएं

सी जी एस
वैश्विक अध्ययन केंद्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज

डॉ संध्या वर्मा

डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ

डॉ आशीष कुमार शुक्ल

राम किशोर

© सीजीएस 2022

रूपांकन: काजल

संश्लेषण

वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत: समसामयिक सरोकार एवं संभावनाएं

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत समसामयिक: सरोकार एवं संभावनाएं 4–7
– संजीव कुमार शर्मा
2. राज्य, सुरक्षा और शान्तिपूर्ण विश्व: वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत की भूमिका 8–11
– अभिषेक नाथ
3. भारत एवं क्वाडः एक समीक्षा – आशीष कुमार शुक्ल 12–15
4. सुरक्षा व्यवस्था की अवधारणा में भारत परिवर्तनीय दशाओं में परिवर्तनीय नीति 16–21
– निशांत यादव
5. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारतः विश्व शांति के लिए एक बेहतर संभावना 22–26
– चंद्रिका आर्य
6. वैश्विक अभिशासन का एक महत्वपूर्ण कारक सुरक्षाः भारत की भूमिका का एक अध्ययन 27–31
– सृष्टि
7. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा का विषयः अफगानिस्तान के संदर्भ में 32–36
– राखी
8. राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी की नई विदेश नीतिः नियमित्ता, लोकप्रियता एवं विश्वसनीयता 37–41
– काजल

संपादकीय

वर्ष 2018 से हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेषण के 38वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः प्रसन्नता एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। 2021 के सितंबर माह का यह अंक विशेष महत्व का है क्योंकि 14 सितंबर को दिल्ली विश्वविद्यालय ने औपचारिक रुप में विकासशील राज्य अध्ययन केंद्र (डीसीआरसी) को वैश्विक अध्ययन केंद्र (सीजीएस) के रुप में मान्यता दी है।

अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से वैश्विक अध्ययन केंद्र अब अपने नव परिवर्तनीय रुप में अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने में पुनः सक्रिय रहेगा। निरंतरता की इस कडी में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के पति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

वर्ष 2021 का सितंबर माह अंतराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न घटनाओं एवं प्रक्रियाओं द्वारा प्रभावित रहा। जहां एक ओर संयुक्त राष्ट्र संघ के पटल पर भारत के लिए सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता हेतू विकसित और विकासशील राज्यों ने एक बार पुनः नई पहल आंरभ की, वहीं दूसरी ओर दक्षिण एशिया में अफगानिस्तान में तालिबानियों द्वारा सत्ता हथियाने से लोकतांत्रिक संस्थाओं के हनन व अस्थिरता के वातावरण ने सुरक्षा संबंधी वादविषयों को पुनः प्रकट किया। चीनी विस्तारवाद को नियंत्रित करने के लिए भारत एवं मित्र राष्ट्रों – अमेरिका, आस्ट्रेलिया व जापान ने क्वाड के माध्यम से दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन के लिए भी नए समझौतें कियें हैं। इन घटनाओं तथा इनसे संबंधित घटनाचक्रों ने वैश्विक स्तर पर भारतीय कूटनीति एवं सुरक्षानीति के समक्ष नवीन चुनौतियां प्रस्तुत की हैं।

वैश्विक परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारतः समसामयिक सरोकार एवं संभावनाएँ' विषय पर लेख आमंत्रित किये। आठ उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ स्वातन्त्र्योत्तर भारत के परिवर्तनीय आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

वर्ष 2021 के संश्लेषण के इस सितंबर माह के नौवें अंक में प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम अपने आगामी समसामयिक तथा महत्वपूर्ण अंक में और अधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का पयास करेंगे।

संपादक मंडल

बृहस्पतिवार, 14 अक्टूबर 2021

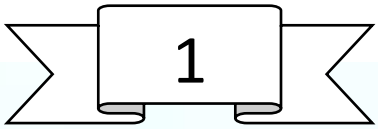

1

वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत समसामयिक: सरोकार एवं संभावनाएं

संजीव कुमार शर्मा

सहायक प्राध्यापक, श्यामलाल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था की समस्या से जूझ रहा है। यह अत्यंत ही चिंतन का विषय है, कि आज जहां हम और हमारे साथी देश और जो भी देश अपने आप को शक्तिशाली देश समझते हैं। वह इस समस्या को सुलझाने के लिए कितने सक्षम हैं? इसका उत्तर वर्तमान समय अपने आप में, गर्भ में समेटे हुए है। कोरोना जैसी महामारी के समय हर शक्तिशाली देश कितना विवश, कितना कमजोर सिद्ध हुआ, हम सम्पूर्ण विश्व जानता हैं कि महाशक्ति कहलाने वाले देश भी आंसू बहाने के लिए मजबूर हो गए। लोग आजीविका भूलकर जीवन को ही बचाने के लिए जूझने लगे। जो प्रकृति हमें मुफ्त में साँसें दे दी थी, उसका भी व्यापार होने लगा।

विचारणीय विषय है यह कि आधुनिकता हमें कहाँ ले जा रही है? आखिर एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में हम कहां जा रहे हैं? कभी आतंक का राक्षस मानव जीवन निगलने को आतुर दिखता है, तो कभी महामारी जीवन को लील जाने को आतुर दिखती है। हम अपनी सीमाओं की सुरक्षा हेतु अस्त्र–शस्त्र बनाने की होड़ में विध्वंस कारी शस्त्र तो बनाएं, पर कोई ऐसा शस्त्र नहीं बना सके जो एक बार प्रयोग करने पर कई जीवन बचा सकता। ऐसी कोई गोली/बम नहीं बना पाए जिससे मानव जीवन से खेलने वाले आतंकवादियों पर चलाई जाती और वह मौत का खेल खेलना बंद कर देते।

इसका अभिप्राय यही है कि विघटनकारी, विनाशकारी शक्तियां दिन पर दिन प्रबल हो रही है और जीवन रक्षक शक्ति शिथिल और निष्क्रिय हो रही है। इसका उदाहरण करोना काल में सब ने देखा, सब ने जाना किसके कारण यह महामारी पूरे विश्व समुदाय को अपने आगोश में लिया पर उसके खिलाफ कोई आवाज नही उठी। यह माहमारी आज भी खत्म नही हुई।

आतंकवाद भी कब से सर उठाए हुए हैं। बरसों से भारत अकेले ही जूझता रहा है, पर कोई भी देश आतंकियों पर दंडात्मक कार्यवाही करने डरता रहा। नतीजा यह हुआ कि एक दिन अमेरिका जैसे देश को भी इसका सामना करना पड़ा तब जाकर खतरे का एहसास हुआ। अपनी गरिमा को बनाए रखने के लिए एक आतंकी के सरगना को मार दिया बाकी सहयोगियों को एक देश तौफे में सौंप दिया। आज वर्तमान में उस देश में आतंकी सरकार चला रहे हैं। कोई

जीवन जीने के लिए जूझ रहा है, तो कोई जमीन बचाने के लिए ,कोई अपना देश बचाने के लिए जूझ रहा है अभी तक सिर्फ चर्चाओं का दौर चला, पर धरातल पर क्या हुआ, कितना हुआ, सब जानते हैं। ऐसे माहाल में कोई देश अपनी सुरक्षा को लेकर समझौता कर रहा है , तो कोई आर्थिक मंदी से उबरने के लिए अपने मित्र देशों को नाराज नहीं करना चाहता। इस भय और अफरातफरी के माहौल में जहां कुछ देश अपनी विस्तारवादी सोच के जरिए सीमा से जुड़े देशों को आंखें दिखाने का प्रयास कर रहा है, तो वही व्यवसायिक दृष्टिकोण के माध्यम से आर्थिक रूप से भी महाशक्ति बनने की लोलुपता उसे हर विनाशकारी कार्य करने को प्रेरित कर रही है। चाहे पाकिस्तान हो या नया आतंकियों का गढ़ अफगानिस्तान हो सब की आर्थिक सहायता करने के लिए विवश है। मानविता का अर्थ ऐसे देश नहीं जानतें उन्हें सिर्फ यह पता है कि उन्हें विश्व का सबसे बड़ा महाशक्तिशाली देश बनना है। बाकी महाशक्ति कहलाने वाले देश सिर्फ चिंता प्रकट करते हैं या विनाशकारी घटना पर दुःख प्रकट करते हैं,या निंदा करके अपनी जिम्मेदारियों की इतिश्री कर लते है इस सुस्त अकर्मण्यता का असर लोगों के जीवन पर ही नहीं पढ़ रहा, अपितु व्यापारिक रिश्तों पर भी प्रभाव डाल रहें है। व्यापार भी तभी फूलता फलता है जब हमारी सीमाएं सुरक्षित हो, विश्वसनीयता का माहौल हो।

आज जितने भी विश्व स्तर पर मंच बने हैं इनकी विश्वसनीयता पर तालिबानी जैसे लोग मुंह चिढ़ाते दिखाई दे रहे हैं। इन सभी के मध्य भारत का चिंतन सराहनीय है जिसने विश्व मंच का सहारा लेते हुए अपनी बात अपने विचार स्पष्टता से और दृढ़ता के साथ विश्व के पटल पर रखी, भारत हमेशा से ही आतंकवाद के मुद्दे को लेकर या पर्यावरण को बढ़ती समस्या हो, या वैश्विक समुदाय के मध्य संबंधों को लेकर विश्वास की बात हो, इन सब विषयों पर भारत ने सुदृढ़ता के साथ अपनी बात रखी और निजी स्वार्थ को छोड़ अपना पक्ष दृढ़ता के साथ विश्व पटल पर रखा वर्तमान समय में पूरा विश्व ही दिशा हिंसा का शिकार हो चला है एक देश दूसरे देश की विश्वसनीयता पर शक की निगाह से देखते हैं। परिणाम स्वरूप कई राष्ट्र एक दूसरे के टकराव की स्थिति में आ चुके हैं। इस कारण पूरा विश्व अव्यवस्थित दिशाहीन होता जा रहा है। पहले जो भी विश्व सुरक्षा, सीमा सुरक्षा, व्यवसाय हितों की सुरक्षा हेतु जो भी राष्ट्र केंद्र बिंदु बने थे उनका कोई प्रभाव नहीं दिखता, धीरे धीरे यह राष्ट्र अब विघटित हो रहे हैं, अपनी भी विश्वसनीयता खो रहे हैं, जिसके कारण महाशक्तियां विघटन की ओर अग्रसर हैं, और दूसरी छोटी–छोटी शक्तियां केंद्र बिंदु बनने की ओर अग्रसर है।

वैसे तो अगर कहा जाए कि सब कुछ गलत ही हो रहा है तो ऐसा भी हम बिल्कुल नहीं कह सकते। क्योंकि यह मानव जीवन है भावनाओं और संभावनाओं से भरा हुआ जहां हम कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं वही वर्ष 2021 विदेश नीति उद्देश्यों की पूर्ति के दृष्टिकोण से अगर चुनौतियां हैं तो अवसर भी लेकर आया है। इस बदलते समय और अस्थिरता के माहौल

में भी एक सामान्य गतिशीलता बनी रहे इसके लिए भारत को निडर साहस पूर्ण कार्यवाही करनी होगी।

विस्तारवाद सोंच को पालने में अग्रसर चीन जैसे राष्ट्रों से निपटने के लिए भारत को भी अपने प्रभाव को और बढ़ाना होगा राष्ट्रों के मध्य अपनी प्रभावपूर्ण स्थिति बनानी होगी जिससे भारत भी विश्व के राष्ट्रों के बीच एक दौरान हम सभी ने राष्ट्रों के बीच जो तनाव देखें, वह निश्चित ही अंतर्राष्ट्रीय मंच की उदासीनता उभरती हुई शक्ति बन सके। कोविड–19 महामारी के प्रभावहिंता को दर्शाता है। कोई एकजुटता का भाव नहीं दिखा, यह अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया की शिथिलता निष्क्रियता के कारण ही विश्व में एक अस्थिरता का भाव पैदा हुआ। जिसके कारण विश्व स्तर पर व्यापारिक रिश्ते भी प्रभावित हुए। जिस समय लगभग सारे राष्ट्र महामारी से जूझ रहे थे ऐसे समय में चीन जैसे देश अपने व्यापारिक रिस्तों को सुदृढ़ करने के लिए नई जमीन तलाशने में जुटे रहे। वहीं भारत अपनी स्थिति से जूझता हुआ समृद्ध देशों की भांति खुद को भी संभाला और अपने साथी राष्ट्रों की सहायता कर मानवीयता का धर्म निभाया।

भारत की चुनौतियां यहां खत्म नहीं होती बल्कि अब यहीं से प्रारंभ होती हैं। जहां सीमा से जुड़े छोटे छोटे राष्ट्र नेपाल जैसे देशों से कुछ खटास दिखी वही चीन भी अपने क्षेत्रवाद की विस्तारवादी नीति के तहत ऐसे छोटे–छोटे राष्ट्रों की कमजोरो का फायदा उठाते हुए भारत के खिलाफ माहौल बनाने की पुरजोर कोशिश करता रहा इस कोशिश को भारत को नाकाम करना होगा। अपने मित्र देशों और पड़ोसी देशों के सात रिश्तो में और मधुरता गोलनी होगी, और बढ़ती हुई संकीर्ण मानसिकता को को कुचलते हुए एक नई शक्ति के उदय में, अपनी भागीदारी को बढ़ाना होगा।

भारत एक प्राचीन सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहां चाणक्य जैसे राजनीतिक भी हुए, यहां से ही योग पूरी दुनिया में फैला, हम हमारी संस्कृति अपने ऋषि–मुनियों की मूल भावना ष्वसुदेव कुटुंबकमष् के भाव को पूरे विश्व में इस भाव को जागृत करना होगा। भारत के अंदर यह साहस है कि वह अपने मूलभूत विचारों को दुनिया के पटल पर रखेगा और अनुसरण करेगा भारत को अपनी यह जिम्मेदारी निभानी होगी क्योंकि यह समन्वय की भावना, मानवता की भावना रक्षा की भावना, जो भारत में है वह कहीं और परिलक्षित नहीं होती। यह भारत के लिए चुनौती भी है और अवसर भी। भारत इस अस्थिरता के माहौल में एक खेवनहार बन सकता है पर्यावरण की सुरक्षा हो, या देश की सीमाओं की सुरक्षा हो, या आतंकवाद से मानवतावाद की सुरक्षा, की बात हो यह सब तभी संभव है जब सभी राष्ट्र जागृत हो, और मानवता को बचाने के लिए सभी राष्ट्र एकजुट होकर सक्रिय हो, इसके लिए भारत अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है। अमेरिका जैसे देश जो अपने आप को महाशक्ति कहते हैं दूसरे देश के जमीन पर

वर्षों रहते हुए भी एक दिन आतंकियों के हवाले कर सब कुछ छोड़कर अपने वतन वापस आ जाते हैं कुछ लालची देश उसका शोषण करना शुरू कर देते हैं और चीन जैसे देश दूसरे देशों की व्यवस्था को अपना अवसर समझ कर उसका पूरा उपभोग करने को आतुर रहते हैं। चीन की इस कुटिलता को समझना होगा देश की क्षेत्रीय सीमाएं हो, या समुद्री सीमाएं हो, हर जगह चीन अपनी सीमाएं अपना प्रभाव अपनी दादागिरी को बढ़ाने का प्रयास करता रहता है। उसकी इस बढ़ती हुई गतिविधियों पर ध्यान देने की जहां जरूरत है, वही यह देश दूसरे देशों के लिए भस्मासुर ना बने यह भी सोचने का विषय है।

भारत के लिए भारत का लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत की ओर होना चाहिए। अपनी शक्ति को अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने के लिए भारत को और प्रयास करने की आवश्यकता है इसके लिए भारत को जर्मनी फ्रांस ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों के साथ–साथ ऑस्ट्रेलिया अमेरिका जापान से रिश्ते और मजबूत करने की जरूरत है।

भारत को सार्क के प्रति ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है इसे और सुदृढ़ बनाए रखना होगा जिससे आर्थिक दृष्टि से भी व्यापारिक दृष्टि से भी भारत केंद्र बिंदु बनकर उभर सके क्योंकि इसमें से कई देश की सीमाएं हमारी देश की सीमाओं से जुड़ी हुई हैं वर्तमान समय भले ही चुनौतीपूर्ण है, पर भारत को अपनी श्रेष्ठता, अपनी सभ्यता, अपनी सौम्यता, अपनी उदारता, अपनी दृढ़ता, अपने शौर्य और पराक्रम को पूरे विश्व के समक्ष दिखाने का एक अवसर भी है। हमें पूर्णतया विश्वास है भारत इन चुनौतियों का सामना करते हुए एक दिन विश्व गुरु की भूमिका में अवश्य होगा यह हमारा अटल विश्वास है।

♦♦♦♦♦

2

राज्य, सुरक्षा और शान्तिपूर्ण विश्व: वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था में भारत की भूमिका

अभिषेक नाथ

सहायक विज्ञाता, एम एल टी कॉलेज, सहरसा

वेस्टफालिया की संधि (1648) ने जिस राज्य व्यवस्था की संकल्पना प्रस्तूत की, उसकी विशिष्टता सुदृढ़ सीमाओं तथा आन्तरिक और बाह्य संप्रभुता से लैश एक राष्ट्र की स्थापना थी। किन्तु राष्ट्र की संकल्पना एक स्थिर संकल्पना नही है और संप्रभु क्षेत्र पर दावे और प्रतिदावे ने सुदृ ढ़ सीमाओं को भी विवादित सीमाओं में परिवर्तित किया है। साथ ही सुरक्षा की परिवर्तित अवधारणाओं के बावजुद सीमाओं की सुरक्षा वैश्विक स्तर पर अपना महत्त्व आज भी बरकरार रखे हुए है। जिसका परिणाम वैश्विक शांति की स्थापना को एक मुश्किल चुनौती के रूप में प्रस्तूत करती है। वर्तमान आलेख उपरोक्त सन्दर्भ में वैश्विक सुरक्षा में भारत की भूमिका का परीक्षण करता है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान में विश्व अर्थव्यवस्था की धुरी एशिया है और चीन तथा भारत भविष्य में दो महत्वपूर्ण विश्वशक्ति के रूप में उभरने की क्षमता रखते है। किन्तु एक हेजेमोन (Hegemon) के रूप में स्वयं को स्थपित करने की चाह में चीन ने भारत और पूर्वी एशियाई देशों के साथ लगने वाले अपनी सीमाओं में घुसपैठ और अपनी संप्रभुता का दावा पेश कर इस सम्पूर्ण क्षेत्र में शांतिपूर्ण संबंधों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

दूसरी ओर संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी देश चीन के वैश्विक उभार को स्वीकार करने को तैयार नहीं है और इसे वैश्विक खुली अर्थव्यवस्था के भविष्य के लिए चुनौती मानते है। विशेषकर चीन के अफ्रीका और एशिया के देशों में बढ़ते प्रभुत्व से चिंतित है और उनका मानना ही कि पश्चिमी प्रशांत महासागर और हिन्द महासागर में चीन की सामरिक उपस्थिति समुद्री व्यापार और आवागमन के लिए एक चुनौती हो सकती है।

उपरोक्त दोनों ही संभावनाएं कुछ तो चीन के आक्रामक व्यवहार और कुछ संयुक्त राज्य और पश्चिमी देशों के इस आशंका पर टिकी है कि एक हेगेमोन के रूप में चीन का उदय विश्व के लिए अकल्पनीय चुनौतियाँ ला सकता है और संयुक्त राज्य की हेगेमोनिक स्थिति का खोना विश्व में एक नयी व्यवस्था को जन्म दे सकता है, जो उनके अनुकूल न हो। ऐसी कोई भी संभावना स्पष्ट तौर पर वर्तमान में स्थापित शांति के लिए चुनौतीपूर्ण होगी।

भारत जो की एक लम्बे समय तक गुटनिरपेक्षता का ध्वज वाहक रहा है और विश्व पटल पर संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में शांति की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध रहा है, उसके लिए यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ भारत के लिए चुनौती और संभावनाएं दोनों ही प्रदान करता है। भारत जो स्वयं भी एक उभरती हुई शक्ति है और साथ ही अपनी सीमाओं पर चीन के आक्रामक व्यवहार से दुखी है उसे पश्चिमी देशों ने एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखना प्रारंभ किया है जो चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित भी कर सकता है और वैश्विक शांति पर संभावित संकट को टालने में सहायक हो सकता है।

परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्षता और संयुक्त राष्ट्र की भावना से अपनी सहमति के बावजुद भारत ने दि क्वाड्रीलेटरल सिक्यूरिटी डैलौग (क्वैड) में अपनी सहभागिता संयुक्त राज्य, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ सुनिश्चित की है।

भारत की सीमा पर दुसरे उभरता हुआ संकट अफगानिस्तान से संयुक्त राज्य की सेना की वापसी और तालिबान के अफगानिस्तान पर अधिग्रहण से उत्पन्न हुआ है। इस बात की पूरी सम्भावना है कि तालिबान जिसने पाकिस्तान के सहयोग से अपनी स्थिती अफगानिस्तान में सुदृढ़ की है, उसका अगला लक्ष्य कश्मीर में आतंकवाद को बढ़ावा देंना होगा। तालिबान के अधिग्रहण से भारत के अफगानिस्तान में आर्थिक निवेश और सामरिक संभावनों को काफी नुकसान पहुंचा है। किन्तु यह बात ध्यान रखने योग्य है कि चाहे अंतर्रराष्ट्रीय आतंकवाद के नाम पर अफगनिस्तान में संयुक्त राज्य के उपस्थिति की बात हो या अचानक वापसी की, इसका निर्णय एकतरफा रहा है। भारत की चिंता या अन्य वैश्विक शांति के लिए उभरने वाली चिंताओं का उसमे कोई स्थान नहीं रहा है। स्पष्ट है कि चाहे सुरक्षा की चिंता हो या शांति की स्थापना यह राज्यों की राष्ट्रीय हितों के अधीन रहा है।

यद्यपि वैश्विक शांति के लिए किया गया कोई भी प्रयास शायद गलत नहीं ठहराया जा सकता, यदि हम दो विश्व युधों को गलत नहीं ठहराते जो की कथित तौर पर शांति स्थापना के लिए लड़े गए।परंतु ध्यान देने की बात यह है कि शांति स्थापना के अधिकतर प्रयास आदर्शवादी के स्थान पर यथार्थवादी सोच का परिणाम रहे है। जहाँ एक ओर चीन का व्यवहार और अफगानिस्तान का संकट यथार्थवादी रवैये का परिणाम है वही भारत और अन्य शक्तियों की प्रतिक्रिया भी यथार्थवादी संभावित संकट को ही प्रदर्शित करती है।

सुरक्षा और शांति की अपनी आवश्यक्तानुकुल परिभाषाएं दी जाती रही है। पिछले लगभग चार सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि किस तरह ब्रिटेन और संयुक्त राज्य के हेजेमोन रहते हुए विश्व स्तर पर उपनिवेशवाद, शोषण और संघर्ष का वातावरण रहा है। बीसवीं सदी में संयुक्त राष्ट्र के अस्तित्व के बावजूद सुरक्षा और अपेक्षित शांति की स्थापना

के प्रयासों को पश्चिमी देशों ने अपनी राष्ट्रीय हितों के अनुकूल परिभाषित किया है। तात्पर्य यह है कि सुरक्षा और शांति का विषय देशों और उनकी सरकारों की अपनी सुविधा और हितों के आलोक में देखे जाते रहे हैं ना कि वैश्विक शांति की वास्ताविक इच्छा से।

भारत के लिए चीन और अफगानिस्तान से प्राप्त हो रही चुनौती के आलोक में इस बात को अस्वीकृत करना कठिन है कि क्वैड जैसे सुरक्षा वार्ता उसके हित में नहीं है किन्तु यह ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है कि वैश्विक शांति के लिए भारत के प्रयासों जैसे पूर्ण निरस्त्रीकरण, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर निष्पक्ष रुख, समावेशी आर्थिक व्यवस्था और संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्था का लोकतंत्रीकरण का पश्चिमी राष्ट्रों ने आजतक समर्थन नहीं किया या आंशिक समर्थन ही किया है।

लोकतंत्र और मानव अधिकारों की रक्षा के नाम पर पश्चिमी देशों द्वारा किए गए व्यवहार भी चयनित रहे है। अतः भारत के लिए यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है कि बिना पश्चिमी देशों का मोहरा बने कैसे अपनी रणनीतिक हितों को साधे।

द्विपक्षीय वार्ताएं और राजनयिक प्रयास सदैव ही विदेश नीति क महत्वपूर्ण और सफल औजार रहे है, जिसका प्रयोग अपने हितों की रक्षा के लिए किया जाना चाहिए और जिसकी असफलता शांति के लिए संकट सिद्ध होती है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त राज्य ने भी अफगानिस्तान से वापसी के पूर्व तालिबान और अन्य गुटों से पर्दे के पीछे वार्ता की थी। स्वाभाविक रूप से इसका उद्देश्य अमरीकी हितों को साधने की रही होगी। भारत के लिए भी यह महत्वपूर्ण है कि वह तालिबान और चीन से ऐसे प्रयासों को आगे बढ़ाये। भारत जब म्यांमार के सैनिक शासन से वार्ता और अपने संबंधों को स्थापित कर सकता है ता तालिबान की सरकार के साथ भी ऐसे प्रयास किये जा सकते है। जिसमे अन्य क्षेत्रीय शक्तियों का जैसे ईरान और सऊदी अरब से सहयोग लिए जा सकते है। चीन के साथ तो पहले ही भारत वार्ता की मेज पर है। महतवपूर्ण यह है कि चीन को यह समझाने का प्रयास किया जाए कि विश्व में भारत और चीन दोनों के ही साथ साथ उभार के लिए पर्याप्त संभावनाएं है और भारत के साथ सहयोग ही दोनों के हित में है।

भविष्य की संभावनाओं में संयुक्त राज्य और पश्चिमी देश अपनी वैश्विक वरीयता को बनाए रखने के लिए ही भारत और चीन के साथ अपनी रणनोति को पुनार्विन्यसित कर रहे रहे, जिसे भारत को समझने और अनुकूल व्यवहार और सहयोग का प्रयास करने की आवश्यकता है। वैश्विक शांति और सुरक्षा के भारत के रिकार्ड संयुक्त राज्य और पश्चिमी देशों से अधिक विश्वसनीय रहे है। जिसका असर भारत को वैश्विक दक्षिण के साथ ही पश्चिमी देशों का

समर्थन और संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा परिषद् के अस्थायी सदस्य के रूप में बार-बार चुना जाना है।

निश्चित तौर पर वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए भारत को नेतृत्व और सहयोग का प्रयास करना चाहिए किन्तु इस बात का हमेशा ही ध्यान रखा जाना चाहिए कि सुरक्षा और शांति आदर्शवादी के स्थान पर यथार्थवादी सोच और प्रयास के परिणाम रहे है और भारत के लिए यह एक चुनौती और संभावनाएं दोनों ही प्रदान करती है। राज्य का वेस्टफालिया मॉडल किसी भी आदर्शवादी सोच पर हमेशा ही हावी रहा है।

♦♦♦♦♦

3

भारत एवं क्वाडः एक समीक्षा

आशीष कुमार शुक्ल

सहायक आचार्य, सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

"जब विश्व कोविड–19 महामारी से लड़ रहा है, क्वाड के रूप में, हम सभी पुनः मानवता के हित में एकजुट हुए हैं। अपने साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर क्वाड ने सकारात्मक विचार तथा सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ने का निर्णय किया है। क्वाड वैश्विक हित हेतु एक शक्ति की भूमिका में कार्य करेगा। क्वाड में हमारा सहयोग एशिया–प्रशांत तथा विश्व में शांति एवं समृद्धि सुनिश्चित करेगा।" 24 सितंबर 2021 को वाशिंगटन डीसी में प्रथम वैयक्तिक क्वाड सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ये शब्द विश्व शांति को सुनिश्चित करने हेतु ना केवल एक संगठन के रूप में क्वाड अपितु एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उदीयमान भारत की प्रतिबद्धता को भी दर्शाते हैं। ये शब्द ऐस भारत की अभिव्यक्ति हैं जो 21वीं सदी के परिवर्तनीय वैश्विक परिदृश्य में अपनी व्यापक भूमिका के निर्वहन हेतु प्रतिबद्ध है। आज विश्व महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन का साक्षी हो रहा है तथा इसने अंतर–राज्यीय संबंधों में भी व्यापक परिवर्तन किए हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ–साथ वैश्विक शांति एवं सुरक्षा को सुनिश्चित करने का केंद्र पश्चिम से पूर्व की ओर विस्थापित हो रहा है जिसके कारण समकालीन सुरक्षा व्यवस्था तथा राज्यों के मध्य संरेखण में भी परिवर्तन देखा जा सकता है। एशिया अब महत्वपूर्ण आर्थिक तथा सैन्य क्षमताओं की प्रमुख धारक शक्तियों का केंद्र है। वैश्विक शक्ति संरचना में एशियाई बहुध्रुवीयता एक महत्वपूर्ण तथ्य बन चुकी है। ऐसे में यह प्रश्न समीचीन प्रतीत होता है कि इस वैश्विक शक्ति संरचना को आकार देने में भारत की क्या भूमिका हो सकती है? क्वाड सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उपरोक्त शब्द इस प्रश्न के उत्तर के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। मानवता के व्यापक हित में एक अर्थपूर्ण एवं प्रभावी वैश्विक शक्ति के रूप में क्वाड के गठन की दिशा में भारत की प्रतिबद्धता को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। विश्व की प्रमुख शक्तियों, अमेरिका, जापान तथा ऑस्ट्रेलिया, के साथ इस संगठन के माध्यम से भारत वैश्विक सुरक्षा, जलवायु संकट तथा पर्यावरण संरक्षण, तकनीक तथा सूचना–प्रौद्योगिकी, कोविड–19 से संबंधित महत्वपूर्ण औषधियों की उपलब्धता, स्वास्थ्य एवं संरचनागत क्षमता, जैसे प्राथमिकताओं के साथ महती भूमिका का निर्वहन करने हेतु दृढ़–प्रतिज्ञ है।

क्वाड को 2004 की सुनामी तथा मालाबार युद्धाभ्यास के समय से ही विचारित किया जाने लगा था। 2012 में जापान के प्रधानमंत्री द्वारा एशिया–प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता बनाए रखने के उद्देश्य से एशिया के 'लोकतांत्रिक सुरक्षा चतुष्कोण' (जापान, भारत, ऑस्ट्रेलिया तथा अमेरिका) के विचार पर बल दिया गया। परिणामस्वरूप 2017 में फिलीपींस में क्वाड की प्रथम आधिकारिक बैठक हुई। क्वाड का उद्देश्य एशिया–प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक समुद्री मार्गों को किसी भी प्रकार के सैन्य अथवा राजनीतिक नियंत्रण से मुक्त रखना है। इसे मुख्य रूप से एक मूल्य–आधारित वैश्विक व्यवस्था सुनिश्चित करने के एक प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। इसके सदस्य देश समसामयिक वैश्विक विषयों जैसे, महत्वपूर्ण तकनीकों, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक महामारी, शिक्षा आदि पर विचार साझा करते हैं।

क्वाड के एक महत्वपूर्ण रणनीतिक सदस्य तथा 2023 में जी–20 की अध्यक्षता के लिए चयनित राष्ट्र के कारण, क्षेत्रीय तथा पार–वैश्विक परिदृश्य में महासागरीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने हेतु भारत की रणनीतिक भागीदारी क्वाड के उद्देश्यों के अनुरूप है। यद्यपि भारत ने निश्चित रूप से वैश्विक स्तर पर अपनी सुदृढ़ उपस्थिति को सुनिश्चित किया है तथा विभिन्न वैश्विक मंचों पर उसकी यह उपस्थिति देखी भी जा सकती है, परंतु इसके समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें भारत की विश्व शक्ति की भूमिका के निकष के रूप में भी देखा जा सकता है। एशिया महाद्वीप में चल रहा शक्ति संघर्ष इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है, जिसमें एक ओर भारत के समक्ष चीन जैसा आर्थिक एवं सामरिक रूप से सशक्त राष्ट्र है जिसका भारत के साथ सीमा विवाद भी है तथा जो भारत की सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता जैसे विषयों पर निरंतर विरोध प्रकट करता रहा है। वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान जैसा राज्य है जो निरंतर आतंकवाद के रूप में गैर–राज्यीय तत्वों द्वारा भारत के समक्ष चुनौती उत्पन्न कर रहा है। ऐसे में भारत को अपनी आर्थिक एवं सामरिक संसाधनों का एक बड़ा भाग इन देशों के साथ शक्ति संतुलन को बनाए रखने में लगाना पड़ रहा है। विगत एक वर्ष में जिस प्रकार से चीन की ओर से नवीन चुनौतियाँ मिल रही हैं, ऐसी स्थिति में क्वाड की कूटनीतिक उपयोगिता क्या होगी इसका अनुमान लगाना भी कठिन ही है।

यह कहा जा सकता है कि शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत गुट–निरपेक्षता से पृथक हो गया था परंतु वह अभी भी किसी देश अथवा समूह गठबंधन में प्रवेश करने के समर्थन में नहीं है। ऐसे में भारत क्वाड को किसी प्रकार सैन्य गठबंधन, जैसा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने इसे चीन के विरुद्ध 'लोकतंत्रों का गठबंधन' कहा, का रूप देने में असहज भी है। भारत ने प्रारंभ से ही गुट–निरपेक्ष नीति को बनाए रखने के प्रयास में अमेरिका तथा रूस से

परस्पर संतुलित संबंध विकसित किए हैं। परंतु एक तथ्य यह भी है कि रूस प्रारम्भ से ही भारत का पारंपरिक सामरिक सहयोगी रहा है। रक्षा उपकरणों के क्षेत्र में भारत की अधिकाधिक निर्भरता रूस पर ही रही है। भू–रणनीतिक रूप से देखें तो एशिया महाद्वीप में शक्ति संरचना की दृष्टि से चीन तथा रूस दो महत्वपूर्ण देश हैं। चीन भारत का परंपरागत विरोधी रहा है तथा रूस परंपरागत सहयोगी। ऐसे में क्वाड जैसे रणनीतिक मंच पर अमेरिका के साथ भारत का औपचारिक गठजोड़ रूस को भारत के प्रति असहज करने वाला है।

क्वाड के संबंध में एक अन्य दुविधा यह भी है कि यह नाटो की भांति कोई सैन्य संगठन नहीं है, तथा ना ही सामूहिक सुरक्षा के प्रति उसकी कोइ प्रतिबद्धता है। इसके सदस्य देशों के मध्य जो भी सुरक्षा सहयोग है वह व्यक्तिगत स्तर पर पहले से ही है। 2+2 (विदेश मंत्री एवं रक्षा मंत्री के साथ) बैठकों के माध्यम से यह सहयोग व्यक्त भी किया जाता रहा है। परंतु ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम तथा यूनाइटेड स्टेट (AUKU) का गठजोड़ चीन को नियंत्रित करने के लिए एक सशक्त सुरक्षा समूह है। ऐसे में अमेरिका क्वाड के सुरक्षा, संतुलन एवं शांति बनाए रखने संबंधी अपेक्षाओं को कितना समर्थन देता है इस पर भी संशय है। यह संशय उस समय और अधिक बढ़ जाता है जब अमेरिका अपनी परमाणु पनडुब्बी की तकनीक साझा करने के लिए अनिच्छुक रहता है परंतु वह ऑस्ट्रेलिया के साथ इस विषय पर सहमत हुआ है। ऐसे में क्वाड के एक सदस्य देश (ऑस्ट्रेलिया) के साथ महत्वपूर्ण तकनीक साझा करना तथा दूसरे सदस्य (भारत) को इससे वंचित रखना अमेरिका जैसे महत्वपूर्ण सदस्य देश की समान प्रतिबद्धता पर संशय उत्पन्न करता है। यद्यपि भारत के रणनीतिक विद्वानों ने इस संबंध में भारत को सचेत भी किया है कि रक्षा एवं सामरिक क्षेत्र में उसे अपने स्रोतों में विविधता बनाए रखना ही उचित होगा। संभवतः रूस से अत्याधुनिक रक्षा प्रणाली एस–400 को प्राप्त करने सबंधी समझौता ऐसा ही एक प्रयास है।

यद्यपि उपरोक्त आपत्तियों के पश्चात भी क्वाड भारत के लिए महत्वपूर्ण भी है तथा औचित्यपूर्ण भी। यदि संभावनाओं को देखा जाए तो यह दक्षिण एशिया में भारत को ना केवल सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में अपितु आर्थिक क्षेत्र में भी चीन के विरुद्ध दीर्घकालिक रणनीति प्रदान कर सकता है। चीन ने बीआरआई के साथ–साथ अन्य कूटनीतिक प्रयासों से वैश्विक निर्यात श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। क्वाड के माध्यम से, भारत वैश्विक व्यवस्था को आकार देने तथा चीन के विस्तारवाद को रोकने में प्रभावी हो सकता है। इसके साथ ही यह भारत के लिए किसी सैन्य गठबंधन में सम्मिलित हुए बिना गहन रक्षा सहयोग प्राप्त करने के अवसर भी बनाए रखता है। क्वाड के लिए भारत एक महत्वपूर्ण देश है। भारत की सदस्यता के अभाव में संभवतः एशिया में क्वाड की विश्वसनीयता एवं स्वीकार्यता कम होगी, जिससे इसका

एशिया–प्रशांत का विस्तार सीमित होकर मात्र प्रशांत तक ही रह जाएगा। दूसरी ओर यह परस्पर–लाभ सुनिश्चित करने का सहयोग है। क्वाड को सशक्त बनाए रखने के लिए अमेरिका को निरंतर भारत को जापान तथा ऑस्ट्रेलिया के समान महत्व देना होगा तथापि इस सहयाग को एक औपचारिक संगठनात्मक संरचना का रूप देने की दिशा में भी कार्य करना होगा। इन सबसे महत्वपूर्ण क्वाड के सदस्य देशों को यह ना सोचते हुए कि यह संगठन किसके विरुद्ध है, इस बात पर अधिक विचार करना होगा कि इस सहयोग का क्या अर्थ है। विशेष रूप से भारत के लिए यह एक अवसर है कि वह समस्त प्रकार के बहुपक्षीय सहयोग की दिशा में कार्य करे जिससे एक विवाद रहित एशिया–प्रशांत क्षेत्र का निर्माण किया जा सके।

♦♦♦♦♦

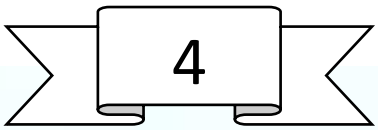

4

सुरक्षा व्यवस्था की अवधारणा में भारत परिवर्तनीय दशाओं में परिवर्तनीय नीति

निशांत यादव

सहायक आचार्य, सत्यवती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

यूरोप में 1648 में सम्पादित हुई वेस्टफेलिया की संधि नें न केवल आधुनिक राष्ट्र–राज्य की संकल्पना का उदय किया बल्कि इसके साथ ही इस राष्ट्र–राज्य को निरंतर हो रहे युद्ध की संभावना से सुरक्षा प्रदान करने के लिए राजनीतिक सीमा रेखा को भी जन्म दिया। और बाह्य सीमा रेखा की इसी अवधारणा नें संप्रभुता और सुरक्षा जैसे राज्य के अतिआवश्यक कारकों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अत्यधिक प्रभावी बना दिया। 1945 में सामुदायिक सुरक्षा की अवधारणा के तहत संयुक्त राष्ट्र संघ के उदय नें सुरक्षा को और मान्यता देते हुए अपने चार्टर में एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र की संप्रभुता के साथ–ही–साथ एकता और अखंडता को बनाए रखने की उद्घोषणा की। इसी उद्घोषणा से राज्यों की राजनीतिक सीमा रेखा लगभग सुनिश्चित कर दी गई और उसकी बाह्य सुरक्षा की जिम्मेदारी उस राष्ट्र–राज्य के साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्यों की भी हो गई। यहीं से राष्ट्र के भीतर सुरक्षा के दृष्टिकोण से अन्य राष्ट्रों से आने वाले नागरिकों हेतु आगमन प्रपत्र यानी वीजा की अनिवार्यता हो गई। इस तरह हम देखते हैं कि वेस्टफेलिया को संधि से उदित सुरक्षा की अवधारणा संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण से और जटिल होते हुए वणिकवादी व्यवस्था के दौरान देशज उद्योगों को बढ़ावा देनें और लाइसेंसराज के नाम अत्यधिक जटिल हो गई। हालाँकि वैश्वीकरण के आगमन नें मृदु शक्ति के उदय के तौर पर सुरक्षा की इस जटिल अवधारणा को थोड़ा सुगम और ग्राह्य बनाया लेकिन वर्तमान वि–वैश्वीकरण के दौर नें पुनः सुरक्षा के प्रश्न को राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मुख्यधारा में लाकर खड़ा कर दिया है।

सुरक्षा की इस अवधारणा में भारत और भारतीय नेतृत्व की परिचर्चा करें तो ब्रिटिश काल से पूर्व भारत के राजनीतिक–भौगोलिक अस्तित्व के बारे में भले ही भिन्न विचार दिए जाते हों, परंतु इस विचारध्धारणा के संबंध में कोई मूलभूत अंतर नहीं पाया जाता कि इतिहास में पहली बार इस उपमहाद्वीप के नागरिकों ने सन 1946–1947 में राष्ट राज्य के रूप में स्वयं को गठित किया। जब इसको एक तरफ डूरैंड, एक तरफ रेडक्लिफ, एक तरफ मैकमोहन और एक तरफ

हिंद महासागर के बीच एक स्वतंत्र संप्रभु राजनीतिक पहचान के रूप में भौगोलिक रूप से भूमि बद्ध किया गया। अनेक विविधताओं के बीच नये राष्ट्र की पहचान बनाने के लिए आज हम भारतीय समाज के विभिन्न खंडों की केंद्राभिमुख आकांक्षाओं द्वारा उत्पन्न तनाव में से गुजर रहे हैं। ऐसी दशा में किसी नवसृजित देश के संदर्भ में आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा को आकार देने वाली परिस्थितियों तथा नीतियों के समग्र या प्रमाणित ऐतिहासिक मूल्यांकन की प्रक्रिया में 70 वर्ष की अवधि कुछ कम नहीं होती है। अतः इन बदलते समय के अनुकूल उपर्युक्त नीतियों का परीक्षण करना ही इस लेख का उद्देश्य है।

सुरक्षा की अवधारणा में भारतीय विचारों का परीक्षण हम उसके सैद्धांतिक बिंदुओं से प्रारम्भ करते हैं। इस संबंध में सबसे पहला प्रश्न उठता है कि सन 1947 में बौद्धिक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर भारत की अभिवृत्तियाँ तथा व्यवस्थाएँ क्या थीं? उस समय राष्ट्रों के समुदाय के संप्रभु सदस्य के रूप में भारत की सामूहिक पहचान तथा स्वयं की निश्चित पहचान बन गई थी। भारत की महत्ता के संबंध में इसका भौगोलिक आकार तथा जनांककीय और प्राकृतिक संसाधन प्रमुख कारक रहे हैं। इस सोच से भारतीय इस उपमहाद्वीप में ब्रिटिश आगमन से पूर्व भारत की सभ्यता, इतिहास, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव पर गर्व महसूस करने लगे। स्वामी विवेकानंद तथा महात्मा गांधी जैसे महान पुरुषों द्वारा स्थापित उच्च नैतिक आधारों नें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भारत की स्थिति के बारे में भारतीय लोकमत को प्रभावित किया। स्वामी विवेकानंद नें बार–बार इस बात पर जोर दिया कि भविष्य में, भारत को विश्व में ' शांति के दूत, न्याय एवं नैतिक आधार पर विश्व व्यवस्था के अग्रदूत' की भूमिका निभानी है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत सत्ता या सैन्य ताकत या आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से राज नहीं करेगा। महात्मा गांधी के अनुसार विविधता तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्वतंत्र तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति बनाए रखने तथा चिंतन शक्ति को बढ़ावा देने के प्रति वचनबद्धता भारतीय सुरक्षा नीति का आवश्यक तत्व है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले दशक के दौरान पहले प्रधानमंत्री के तौर पर पंडित नेहरु नें अन्य देशों के साथ संबंध स्थापित होने पर वक्तव्य दिए थे। नेहरु के इन वक्तव्यों में भारत की सुरक्षा नीति की बौद्धिक अंतःवर्ती धाराएँ समेकित होती हैं। 12 जनवरी, 1951 को लंदन से रेडियो प्रसारण में, उन्होंने घोषणा की, 'आज हमें शांति और सभ्य व्यवहार की आवश्यकता है, हम युद्ध नहीं चाहते।' इसके बाद, 22 जून 1955 को मास्को में अपने इस वक्तव्य को और स्पष्ट किया कि, 'हमारे विचार में शांति के मायने युद्ध से भागना नहीं है बल्कि शांति अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं तथा संबंधों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, जिसमें बातचीत के माध्यम से समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करते हुए तनाव कम किया जाता है तथा उसके बाद

विभिन्न प्रकार से राष्ट्रों के बीच सहयोग बढ़ाया जाता है। सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक संपर्कों से व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि होती है तथा परस्पर विचारों, अनुभवों तथा सूचना का आदान–प्रदान होता है।'

परंतु नेहरु के इन सैद्धांतिक विचारो से आगे अब हमें चीन और पाकिस्तान से युद्ध के पश्चात भारत की सामरिक स्थिति और राजनीतिक साख में आए परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करना होगा। इन घटनाक्रमों के कारण भारत को शांति और सहयोग की नीति को त्यागकर प्रत्यक्ष रूप में परमाणु अस्त्रीकरण कार्यक्रम अपनाना पड़ा। और अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार नें 11 मई 1998 को तीन और 13 मई 1998 को दो परमाणु विस्फोट करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। परमाणु अस्त्रों के विकल्पों को ठोस रूप देने से सम्बंधित कारणों की पहचान हम इस निम्नलिखित प्रकार से कर सकते हैं–

- पहला कारण दिन–प्रतिदिन खराब होता जा रहा सुरक्षा का माहौल, जिसका भारत को सामना करना पड़ रहा था तथा आठवें दशक के उत्तरार्द्ध से नेतावर्ग परमाणु नीति तैयार करने के लिए सक्रिय हो गए थे।

- दूसरा कारण निषेधात्मक और भेदभावपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाएँ हैं, जिससे अंतरिक्ष और परमाणु प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत की संभावनाओं की दिशा में भारत के प्रयासों को मात्र दबाया ही नहीं गया बल्कि इन क्षेत्रों में परमाणु विकल्प इस्तेमाल करने की दिशा भी पूर्णतः अवरुद्ध होने की आशंका से घिर गई।

- तीसरा कारण नई अंतर्राष्ट्रीय सामरिक और प्रौद्योगिकी व्यवस्था से विमुख होना था, जिसमें विद्यमान पाँच परमाणु सम्पन्न राष्ट्र लम्बे समय तक अपना प्रभुत्व बनाए रखेंगे।

- चौथा कारण भौगोलिक अखंडता की दृष्टि से स्वतंत्रोत्तर काल के अनुभव के संदर्भ में भारत के लिए यह अपेक्षित है कि इस देश के पास दीर्घकालिक और आधुनातन रक्षा क्षमता होनी चाहिए।

- पाँचवाँ, भारत नें इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित किया है कि निषेधात्मक दबावों के अधीन अन्य परमाणु अस्त्रों की दृष्टि से सक्षम देश भी स्वयं परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बनकर इन दबावों से मुक्त हों।

परमाणु परीक्षण के पश्चात भारत नकारात्मक संभावनाओं के प्रति सतर्क था और उसने इस संदर्भ में आपत्तियाँ भी की। सन् 1963 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा दिए गए सुझावों के विपरीत परमाणु अस्त्रों की संभावनाओं का त्याग करने के बावजूद भारत नें सन 1964 में चीन के परमाणु अस्त्रीकरण पर ध्यान दिया तथा इसके जवाब में यह निर्णय लिया कि भारत को अपनी परमाणु निवारक क्षमता के लिए आधारभूत क्षमताएँ तैयार करनी चाहिए। सन् 1964 में भारत द्वारा प्लूटोनियम संसाधन संयंत्र निर्माण इसी दिशा का परिचायक था। सन् 1967–68 में परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर से मना करने तथा 18 मइ 1974 को पोखरण में किए गए परमाणु विस्फोट परीक्षण इस ओर स्पष्ट संकेत हैं कि भारत का लक्ष्य मूलभूत परमाणु अस्त्र क्षमताएँ प्राप्त करना, इस क्षमता का सृजन करना और इस विकल्प को खुला रखना है कि जब कभी देश को सुरक्षा की दृष्टि से अपेक्षित हो, परमाणु अस्त्र के विकल्प को अपनाया जा सके।

समसामयिक इतिहास में इन घटनाओं का उल्लेख करने का प्रयोजन इस तथ्य पर बल देना है कि भारत की परमाणु नीति यूँ ही बिना किसी लक्ष्य के तैयार नहीं की गई। भारत की परमाणु नीति उस अंतर्राष्ट्रीय अप्रसार प्रवृत्तियों के प्रति जवाबी कार्यवाई है, जिनसे भारत की विश्व–दृष्टि में दीर्घकालिक सुरक्षा हितों को खतरा है। इसी प्रेरणा से भारत नें मिसाइल विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया। क्षेत्रीय सुरक्षा परिवेश में निरंतर हो रहे ह्रास पर ध्यान केंद्रित करने की दृष्टि से पाकिस्तान, चीन, अफगानिस्तान, बांग्लादेश की ओर से उठने वाले खतरे भारत की सुरक्षा के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। इस तरह हम देखते हैं कि खराब क्षेत्रीय सुरक्षा माहौल तथा पूर्ववर्ती समष्टिगत प्रवृत्तियों के कारण भारत परमाणु और मिसाइल अस्त्रीकरण के क्षेत्र में अस्पष्टता से सुस्पष्टता की ओर तथा संभावनाओं से व्यावहारिक उपलब्धि की ओर बढ़ने के लिए बाध्य हो गया। भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण करने तथा परमाणु अस्त्र के परिनियोजन के लिए अपने इरादों की घोषणा से अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा समीकरणों को एक नया आयाम मिला है। इसीलिए भारत के परमाणु अस्त्रीकरण कार्यक्रम, इसके प्रसार तथा अंतरिम नकारात्मक परिणामों का सामना करने के तरीकों के तर्काधार तथा औचित्य की जाँच करना प्रासंगिक होता है।

अंत में निष्कर्ष के तौर पर भारत नें व्यावहारिक रूप में तथा सही अर्थों में अपनी म्लभूत राष्ट्रीय सुरक्षा के हितों की पूर्ति की प्रक्रिया में यथासंभव सीमा तक मूलतः नैतिक मानदंडों का अनुसरण करते हुए विदेश संबंध स्थापित किया। अनेक सीमाओं, सामूहिक स्तर पर अनेक कमियों तथा प्रतिकूल बाहरी दबाव के बावजूद भारत ने अपना सुरक्षा संबंधी लक्ष्य प्राप्त किया है। सर्वाधिक सुखद आश्चर्यजनक तथ्य है की भारत की जनता में विद्यमान लचीलापन तथा समझबूझ के कारण ही हम पूरे विश्व का सामना कर पाए हैं। हालाँकि अब 21वीं सदी के

उत्तरार्ध की तुलना में आने वाले समय में अधिक अनिश्चितता तथा जटिल समस्याएं खड़ी हो सकती हैं।

संदभ–सूची

- दीक्षित, जे.एन (2012). भारतीय विदेश नीति. नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन
- सीकरी, राजीव (2017). भारत की विदेश नीतिरू चुनौती और रणनीति. नई दिल्ली, सेज भाषा
- गांगुली, सुमित (2018). भारत की विदेशनीति, पुनरावलोकन और संभावनाएँ. नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
- पंत, पुष्पेश (2014). 21वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध. नई दिल्ली, मैकग्राहिल एजूकेशन

♦♦♦♦♦

5

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारतः विश्व शांति के लिए एक बेहतर संभावना

चंद्रिका आर्य

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत ने 1 जनवरी 2021 को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थाई सदस्य के तौर पर दो साल का कार्यकाल प्रारंभ किया है। इसके साथ ही भारत को एक अगस्त से एक महीने के लिए सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता संभालने का भी अवसर मिला। विश्व की सबसे शक्तिशाली संस्था में भारत की उपस्थिति विश्व में आपसी सहयोग, शांति एवं सुरक्षा स्थापना के लिए नई आशा पैदा करती है। भारत ओपचारिक रूप से आठवीं बार एक अस्थाई सदस्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में शामिल हुआ है। भारत ने अपने कार्यकाल की शुरुआत अन्तराष्ट्रिय शांति एवं सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने, आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा आदि जैसे वैश्विक मुद्दों के समाधान करने के वादे के साथ की। भारत के अलावा मैक्सिको, केन्या, नॉर्वे, आयरलैंड जैस देशों ने भी सुरक्षा परिषद में अपनी अस्थाई सदस्यता शुरू की।

भारत को जून 2020 में सुरक्षा परिषद में दो साल के कार्यकाल के लिए निर्विरोध चुना गया। महासभा में 193 सदस्यों में से भारत को अस्थाई सदस्य बनाने के लिए 184 वोट मिले। इस उल्लेखनीय जीत के साथ भारत को 1 जनवरी 2021 से शुरू हुआ दो साल तक संयुक्त राष्ट्र के सबसे शक्तिशाली अंग में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ।

वैश्विक समुदाय से भरी मात्रा में समर्थन मिलने के बाद भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, भारत वैश्विक शांति, सुरक्षा व समानता स्थापित करने के लिए सभी सदस्य देशों के साथ पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करेगा। इससे ज्ञात होता है की भारत ने परस्पर सहयोग व सम्मान के माध्यम से वैश्विक सुरक्षा व शांति सुनिश्चित करने के दृढ़ संकल्प के साथ परिषद में प्रवेश किया है।

सुरक्षा परिषद में भारत की अध्यक्षता

भारत को एक महीने के लिए 1 अगस्त 2021 को सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता प्राप्त हुई। परिषद की प्रक्रिया के नियमों के अनुसार 15 सदस्यों में से प्रत्येक के बीच अध्यक्ष पद वर्णनुकर्म के अनुसार बदलता है। निर्धारित नियमों के अनुसार भारत की अगली अध्यक्षता दिसंबर माह 2022 में प्रारंभ होगो। जैसे कि हमेशा से ही भारत विश्वभर में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए

कार्य करता रहा है, इस बार भी भारत ने अंतराष्ट्रीय नियम की प्रधानता व आपसी वार्ता पर जोर दिया है।

पिछले कार्यकालों में भारत की भूमिका

यह पहली बार नहीं है जब भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थाई सदस्य के रूप में चुना गया है। सुरक्षा परिषद की स्थापना के बाद से भारत वर्ष 1950, 1967, 1972, 1984, 1991 और 2011 में गैर स्थाई सदस्य के रूप में दो साल के कार्यकाल के लिए चुना गया था। पिछली बैठको में जो प्रमुख विषय भारत की कार्यसूची में रहहे है उन्हे दो भागों में बांटा जा सकता है।

राष्ट्रीय मुद्दे, किसी विशेष राष्ट्र या क्षेत्र में शान्ति और सुरक्षा प्राप्त करने का मामला,

विषयगत मुद्दे, यह शांति स्थापना, कूटनीति जिसे व्यापक विषय पर चर्चा और विचार विमर्श करता है।

अध्यक्षता की बात करे तो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में यह भारत की 11वीं अध्यक्षता है। पिछली परिषदों की अध्यक्षता में भारत ने मानवाधिकारों के अल्लंघन पर विशेष चिंता जाहिर की है। उदाहरण के लिए, 1977 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद शासन की कड़ी निन्दा की। नस्लवाद और हिंसा पर भारत के कड़े रुख के परिणामस्वरूप लीबिया की अध्यक्षता में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध एक अनिवार्य हथियार प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पारित किया गया था। 1991 में भारत की अध्यक्षता में इराक और कुवैत के बीच युद्ध के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया गया। 1992 में पूर्व युगोस्लाविया के विघटन पर विस्तारपूर्वक विचार–विमर्श हुआ था।

विगत वर्षों में सुरक्षा परिषद में भारत के अधिकांश एजेंडा दुनिया भर में टकराव व अक्रमकता की स्थितियों से निपटने से संबंधित रहे है। परिषद में अध्यक्ष के लिए दो विशिष्ट भूमिकाएं होती हरू पहला राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारियों को निभाना, दूसरा परिषद में अपनी सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे कार्य करना। इन्ही दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाते हुए इस बार भारत ने तीन प्रमुख विषय अपनी कार्यसूची में रखे है। समुन्द्री सुरक्षा, शान्ति स्थापना, आतंकवाद निरोध।

तीन सूत्री–एजेंडा

अगस्त महीने में सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता लेते हुए भारत ने तीन प्रमुख विषयो को अपनी कार्यसूची में प्रार्थमिकता से रखा। तीन सूत्री एजेंडा में ज्वलंत वैश्विक मुद्दे शामिल हैं। समुन्द्री

सुरक्षा, शांति स्थापना व आतंकवाद निरोध। यें मुद्दे भारत की वर्तमान नीतियों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

समुन्द्री सुरक्षा

समुन्द्री सुरक्षा वैश्विक चिंता का विषय है जिसकी प्रासंगिकता भारत प्रशांत क्षेत्र में अधिक है। हाल के दिनों में कई देशों की इंडो पेसिफिक नीतियां चीन के आक्रमक रवैए के कारण विकसित हुई हैं। परिषद में भारत द्वारा समुन्द्री सुरक्षा का मुद्दा उठाया जाना एक सराहनीय कदम है। भारत का उद्देशय हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की आधिपत्य को रोकने की तरफ परिषद सदस्य का ध्यान आकर्षित करना था। इसको भारत की ओर से एक बुद्धिमान एवं साहसिक कदम कहा जा सकता है। यह क्षेत्र में नियम आधारित व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने परिषद में होने वाली बहस समुन्द्री सुरक्षा को बढ़ाना। अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक विषय की अध्यक्षता की। इसके साथ ही समुन्द्री सुरक्षा पर आपसी समझ एवं सहयोग के ढांचे की रूपरेखा तैयार की। यह पहली बार था की कोई भारतीय प्रधानमंत्री सुरक्षा परिषद के सत्र की अध्यक्षता कर रहा हो। यह वैश्विक समस्याओं के प्रति भारत की गंभीरता को दर्शाता है।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधानमंत्री ने व्यापार, पर्यावरण, संपर्क, प्राकृतिक आपदाएं, विवादों का शांतिपूर्ण समाधान, समुन्द्री खतरों सहित पांच सिद्धांतों के दिशा निर्देश का आह्वान किया। अध्यक्षीय बयान में अंतरराष्ट्रीय कानून की सर्वोच्चता पर जोर दिया गया। समुन्द्री गतिविधियां समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा तैयार कानूनी ढांचे पर आधारित होंगी। यह विश्व स्तर पर भारत की मजबूत छवि को दर्शाता है क्योंकि अध्यक्षीय बयान को स्वीकारने के लिए सभी सदस्यों की सहमति की आवश्यकता होती है।

संयुक्त राष्ट्रशांति स्थापना

सुरक्षा परिषद में बतौर अध्यक्ष भारत के एजेंडा में दूसरा बिंदु है शांति स्थापना। संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना के समय से ही भारत ने विश्व शांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई वर्षों से भारत विश्व भर में सेना उपलब्ध करवाने वाला प्रमुख देश रहा है। भारत शांति निर्माण आयोग की स्थापना समय (2005) से इसका सदस्य है। इसकी अध्यक्षता के दौरान भारत ने अपनी प्रमुख प्रार्थमिकताओं में से एक शांति स्थापना की शुरुआत की। इसके अतिरिक्त, संयुक राष्ट्र शांति रक्षा बल में सेवा करते हुए 150 से अधिक भारतीयों ने अपनी जान गंवाई है।

शांति स्थापना पर सुरक्षा परिषद के सत्र की अध्यक्षता भारतीय विदेश मंत्रो एस जयशंकर ने की। शान्ति स्थापना की भारत की वर्तमान रणनीति का उद्देश्य शांति सैनिकों की सुरक्षा को

सर्वोच्च प्राथमिकता देना है। इसलिए शांति अभियानपर भारत के कदम ने ष्सारंक्षको की सुरक्षाष् पर जोर दिया है। शांति व्यवस्था के लिए प्रद्योगिकी एवं संयुक्त राष्ट्र शान्ति सैनिकों के विरुद्ध अपराधो की जवाबदेही पर अध्यक्षीय बयान को भारत की दो उपलब्धियों के रूप में देखा जा सकता हैरू विश्व शांति के लिए भारत की चिंता और भारत की कूटनीतिक सफलता। इसलिए भारत का दृष्टि कोण इस बात पर जोर देता है, बेहतर तकनीक के उपयोग से शान्ति सैनिकों की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाए।

आतंकवाद निरोध

सुरक्षा परिषद में भारत के एजेंडा का तीसरा बिंदु आतंकवाद निरोध है। भारत ने हमेशा विभिन्न द्विपक्षीय और बहुपक्षीय बैठको में आतंकवाद के विरुद्ध अपनी चिंता जाहिर की है। विश्व मंच पर आतंकवाद के मद्दे को उठाया जाना भारत की ओर से एक सुविचारिक कदम है क्योंकि अफगानिस्तान में उभरती स्थिति विशेषकर भारत के लिए चिंता का विषय है।

परिषद में भारत द्वारा प्रस्तावित तीन सूत्री एजेंडा न केवल भारत के राष्ट्र हित के लिए अपितु विश्व भर मे शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। आतंकवाद के विरुद्ध अभियान चलाना और संयुक्त राष्ट्र शान्ति अभियान में सक्रिय भाग लेना भारत के विश्व शांति हासिल करने के लक्ष्य को इंगित करता है।

प्रमुख उपलब्धियां

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में महीने भर की अध्यक्षता निभाते हुए कई उपलब्धियां प्राप्त की है।यह पहली बार था जब समुद्री सुरक्षा की समग्र अवधारणा पर एक व्यापक बहस और राष्ट्रपति का बयान हुआ हो। यह भी पहली बात था जब शान्ति स्थापना के लिए प्रद्योगिकी का बेहतर उपयोग पर खुल कर बहस हुई हो। भारत ने शान्ति सैनिकों के खिलाफ अपराधों के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने का एक प्रस्ताव तैयार किया। भारत की अध्यक्षता में अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा काबुल के अधिग्रहण पर सुरक्षा परिषद द्वारा प्रस्ताव पारित किया गया। भारत की अध्यक्षता में ही सुरक्षा परिषद में सीरिया, म्यांमार, यमन, मध्य पूर्व जैसे शान्ति व सुरक्षा के कई मुद्दों पर सफलतापूर्वक चर्चा हुई।

अग्रिम चुनौतियां

विभिन्न ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ, विश्वव्यापी महामारी तचीन के आक्रमक कदम भारत के लिए सुरक्षा परिषद में अनेकों चुनौतियों को जन्म देते है। भारत प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामकता बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव जैसी महत्वाकांक्षी योजनयो से परिलक्षित होती हैं जो की दक्षिण चीन सागर, चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे में द्विपो पर संप्रभुता का दावा करती

है। परिषद में विभिन्न विवादास्पद मुद्दों को उठाते हुए चीन के साथ पाकिस्तान का मैत्रीपूर्ण रवैया भारत क लिए एक और चुनौती है। भारत की ओर से इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

कोविड के बाद की विश्व व्यवस्था की स्थिति से निपटना कई अन्य चिनोतिया पैदा करती है। कई देश आर्थिक मंदी व स्वास्थ्य आपात स्थिति से जूझ रहे है। साथ ही भारत के लिए अमेरिका आर रूस के मध्य बिगड़ते हालात तथा ईरान और अमेरिका के बीच उभरते तनाव को संभालना मुश्किल होगा।

इन सभी अस्थिरतायो के बीच, भारत को अपने सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नियम आधारित विश्व व्यवस्था सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। यहाँ भारत का पांच दृष्टिकोण सम्मान, संवाद, सहयोग, शान्ति और समृद्धि वैश्विक मुद्दे जैसे आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा को सुलझाने में नए आयाम प्रदान करेगा। साथ ही अन्य देशों के साथ सहयोग सुनिश्चित कर भारत सतत पोषणीय विकास के उद्देश्यों को भी प्राप्त कर सकेगा।

♦♦♦♦♦

6

वैश्विक अभिशासन का एक महत्वपूर्ण कारक सुरक्षाः भारत की भूमिका का एक अध्ययन

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैश्विक सुरक्षा की दृष्टि से भारत का वैश्विक अभिशासन के लिए स्थायी महत्व है। वैश्विक अभिशासन वैश्विक स्तर पर सामूहिक कार्यों के समन्वय के लिए विविध कर्ताओं को साथ लाता है। वैश्विक अभिशासन का लक्ष्य विशेष रूप से शांति व सुरक्षा, संघर्ष के लिए मध्यस्था प्रणाली तथा उद्योगों के लिए एकीकृत मानक को प्रदान करना है। एक सुरक्षा कर्ता के रूप में भारत की प्रासंगिकता का आकलन इसकी गतिविधियों तथा प्रमुख समकालीन सुरक्षा क्षेत्र के भीतर विकास को प्रभावित करने की क्षमता के संदर्भ में किया जा सकता है।

वर्ष 2011 में अफगानिस्तान में भारत की सहभागिता की परिणिती को चिन्हित किया जाता है। अफगानिस्तान–भारत रणनीतिक साझेदारी पर हस्ताक्षर अफगानिस्तान के लिए इस प्रकार का प्रथम कार्य था। तथा नवंबर 2011 में भारत ने तुर्की द्वारा आयोजित "एशिया के हृदय" (Heart of Asia) में सुरक्षा तथा सहयोग सम्मेलन में भाग लिया। इन घटनाओं का महत्व भारत की सहभागिता तथा अफगानिस्तान में अपनी दृढ़ता स्थापित करने और सुदृढ़ करने के प्रयासों में निहित है, जिससे कि न केवल अफगानिस्तान के भीतर तथापि मध्य एशिया में भी प्रभाव डाला जा सके। भारत के लिए अफगान सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने के प्रावधानों सहित, साझेदारी समझौते ने राष्ट्रीय सुरक्षा विषयों पर घनिष्ठ क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग बढ़ाने का आहान किया। हाल के वर्षों में भारत ने अफगानिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ किया है। तथा बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के अंतर्गत भी अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। यह विभिन्न मंचों पर भारतीय राजनयिकों, वार्ताकारों तथा निर्णय निर्माताओं के समूह के रूप में भारतीय रणनीतिक व्यवहार में एक नए चरण का प्रतीक है। इनमें पिछले एक दशक में यूरोपीय शहरों में अफगान नेताओं के साथ हुए विभिन्न अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत की उपस्थिति, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क), शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ), उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) तथा संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत सम्मिलित है।

अफगानिस्तान के लिए पाँचवा सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता बनने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर लगभग 2.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर देने के बावजूद भारत की भूमिका तथा हितों को अनदेखा कर दिया जाता है। अमेरिकी नीति ने भारत को एक अस्थिर कारक के रूप में माना

है, जिससे भारत के प्रत्येक पहल व संकेत से पाकिस्तान में संदेह और नाराजगी उत्पन्न हुई। अफगानिस्तान के प्रति भारत की रणनीतिक दुगुनी रही है:– दिल व दिमाग से जीतने के लिए सॉफ्ट पावर का प्रयोग और अफगानिस्तान को व्यापार तथा परिवहन के एक क्षेत्रीय परिवेश में एकीकृत करना। भारतीय कंपनियां और भारत सरकार सड़के बना रही है, चिकित्सा सुविधाएं प्रदान कर रही है और शैक्षणिक पहलुओं का नेतृत्व कर रही है। इस प्रकार की परियोजनाएं रणनीतिक हित के बिना नहीं है। जैसे 218 किलोमीटर लंबे जरंज–डेलाराम राजमार्ग का निर्माण, ईरान के माध्यम से समुद्र तक अफगानिस्तान की पहुँच को सक्षम करना और अफगानिस्तान के लिए भारतीय सामानों के लिए एक छोटा मार्ग प्रदान करना। भारत की सीमा सड़क संगठन ने 2008 में इस प्रमुख परियोजना को पूर्ण किया 2007 में अफगानिस्तान को सार्क का पूर्ण सदस्य बनाने की पहल के पीछे भारत ही प्रमुख प्रवर्तक था। भारतीय सैन्य जुड़ाव की संभावना दूर–दूर तक है। भारत द्वारा विशेष रूप से ईरान और रूस जैसे क्षेत्रीय खिलाड़ियों के माध्यम से अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए राजनयिक प्रयासों को शीघ्र करने की अधिक संभावना है। इस संबंध में, भारत ने व्यापक अफगान नीति विकसित करने में दृढ़ता और कौशल दिखाया है।

इसके साथ ही, हाल ही में विश्व के दो महत्वपूर्ण संगठनों– शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) तथा क्वाड (चतुर्गट) की भूमिका में भी परिवर्तन आया है। यह संयोग है कि एससीओ और क्वाड की शिखर वार्ताएं एक ही माह में आयोजित हुई। भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने इस दोनों शिखर वार्ताओं में भाग लिया।

तजाकिस्तान की राजधानी दुशावें में सम्पन्न एससीओ शिखर वार्ता अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकवादियों के आक्रमण की छाया में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्रथमतया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अफगानिस्तान के घटनाक्रम पर भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। तालिबान का नाम लिए बिना ही आतंकवाद की नई हुकूमत को अस्वीकृत कर दिया। उन्होंने कहा कि नई हकूमत समावेशी नहीं है तथा यह विचार–विमर्श के स्थान पर हिंसा का सहारा लेकर बनी है। उन्होंने इसे मान्यता देने के बारे में विश्व समुदाय को भी आगाह किया। भारत का मानना है कि अधिक विचार–विमर्श कर सामूहिक रूप से मान्यता के बारे में निर्णय करना चाहिए। इसमें संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को भी स्वीकार करना चाहिए। भारत की ओर से यह कथन अधिक साहसिक है तथा आदर्श अन्तराष्ट्रिय राजनीति तथा नैतिकता के अनुरूप है।

वास्तव में तालिबान शासन से सबसे अधिक संकट भारत को है। चीन के लिए अफगानिस्तान से आतंकवाद का अधिक संकट नही है। रूस के प्रभाव वाले मध्य एशिया के देशों के लिए भी यह संकट अधिक घातक नहीं है। इन देशों के साथ सुरक्षा गठबंधन के माध्यम से रूस

सीमा पर किसी भी आतंकवादी गतिविधि को रोकने में सक्षम है। भारत के लिए दोहरी समस्या है। तालिबान के साथ ही इस आतंकवादी संगठन का संचालन करने वाले पाकिस्तान की दृष्टि जम्मू–कश्मीर पर है। जैसे ही तालिबान शासक अफगानिस्तान में अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। पाकिस्तान की सीमावर्ती क्षेत्रों से आतंकवादी हलचल प्रारंभ हो जाएगी। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई बांग्लादेश की स्थापना का बदला लेने के लिए भारत के विरुद्ध कुचक्र अवश्य चलेगी। जम्मू–कश्मीर ही नहीं अपितु पंजाब सहित सीमावर्ती राज्यों में अस्थिरता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाएगा।

राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारण और उसकी सफलता के कुछ विशिष्ट आधार होते है, जिनमें भू–राजनैतिक तथा भू–सामरिक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार बनने से भारत विरोधी शक्तियां समूहबद्ध होती प्रदर्शित हो रही है। इससे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो रहा हैा कि भारत के लिए चुनौती बढ़ गई है। शक्ति संतुलन, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक हितों की रक्षा तथा तालिबान पर दबाव बनाए रखने के लिए अफगानिस्तान में भारत समर्थक शक्तियों का सुदृढ़ रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें पूर्व की भारत की नीति की तरह आर्थिक, सामरिक तथा राजनीतिक समर्थन मिलता रहना चाहिए।

वैश्विक अभिशासन के अंतर्गत वैश्विक सुरक्षा के पहलू के क्षेत्र में भारत की प्रासंगिकता को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76 वें सत्र को भारत के प्रधानमंत्री ने संबोधित करते हुए कहा कि नियम आधारित विश्व व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अंतराष्ट्रीय समुदाय को एक स्वर में बोलना होगा। तथा इसके साथ ही, इस तथ्य का भी उल्लेख किया कि जो देश आतंकवाद का प्रयोग राजनीतिक साधन के रूप में कर रहे है, उन्हें यह समझना होगा कि आतंकवाद उनके लिए भी समान रूप से संकट है।

वैश्विक राजनय में अमेरिका के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण खंड यूरोप का है। फ्रांस के साथ रफाल लड़ाकू विमानों की खरीद का समझौता कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय वायु सुरक्षा को संरक्षित व सशक्त किया है। इसके साथ–साथ वैश्विक स्तर पर एक राजनय के भाग पर भी विश्वसनीय सहयोग अर्जित करने में सफलता प्राप्त की है। जर्मनी, इटली, ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय देशों से भी भारत के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुए है। नवंबर, 2015 में ब्रिटेन के वेंवले स्टेडियम में भारत का नेतृत्व कर रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुनने के लिए 60 हजार लोगों का एकत्रित होना इस तथ्य का सूचक है कि भारत वैश्विक नेतृत्व का पुष्ट उदाहरण है।

अमेरिका, यूरोप तथा अफ्रीका जैसे देशों के साथ भारत की विदेश नीति में पड़ोसियों से सोहार्दपूर्ण संबंधों की प्राथमिकता रही है। इसके अतिरिक्त आज बांग्लादेश भारत के स्वतंत्रता

दिवस की परेड में अपनी सेना से सलामी दिलाकर भारत के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है। इसके साथ ही मालदीव सम्पूर्ण विश्व में भारतीय शौर्य की ध्वनि को प्रकट करता है। श्रीलंका, जो तमिलों के विषयों पर भारत के विरुद्ध स्वर प्रकट करता था, आज के समय में भारत से मैत्री पर अभिमान करता है।

संदर्भ–सुची

Jivanta Schotti and Markus Pauli, (2014). India as a Global Security Actor- The Handbook of Global Security Policy, https://www.researchgate.net/publication/276432

J Jung, (2016). Global Governance: Present and Future, Palgrave Commun 2, 15045 , http://doi.org/10.1057, Palcomms.2015.45

Sujit Lahiry (2019). "Conflict, Peace and Security: An International Relations Perspective with Special Reference to India", Millennial Asia 10(1) 76-90, in.sagepub.com/journals-permission-India, DOI: 10.1177/0976399619825691.

http://www.indiatoday.in

m.economictimes.com

www.bbc.com

http://m.economictimes.com

♦♦♦♦♦

7

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा का विषयः अफगानिस्तान के संदर्भ में

राखी

सहायक आचार्य, भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय सुरक्षा विमर्श में इसका गठन करने वाले तत्वों की परिभाषा और संबंधित नीतियों की व्याख्या समावेशी और व्यापक होनी चाहिए। मौर्य काल (लगभग 350 ईसा पूर्व) के चाणक्य सूत्र ने राष्ट्रीय सुरक्षा के विभिन्न तत्वों को समाहित करते हुए इसके वितरण के लिए एक समान दृष्टिकोण पर जोर दिया ताकि लोगों की निरंतर भलाई सुनिश्चित हो सके। पश्चिम् से पूर्व की ओर हो रहे शक्ति संतुलन में क्रमिक बदलाव ने प्रमुख राज्यों के मध्य सुरक्षा प्रतियोगिता का आरंभ किया है। भारत की आर्थिक और सैन्य रुपरेखा से इसकी छवि में हुए परिवर्तनों ने इसे सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने तथा इनका प्रबंधन करने पर बल दिया है। इस संदर्भ में यह देखते हुए कि किस प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ता है, भारत के सैन्य आधुनिकीकरण की प्रकृति और दायरे पर विचार करने योग्य है। भारतीय रक्षा बलों का आधुनिकीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें जनशक्ति और गोलाबारी के मध्य संतुलन के साथ–साथ स्वदेशी स्रोतों से हथियारों के अधिग्रहण और हथियारों के आयात के मध्य के मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। 1998 के परमाणु परीक्षणों के पश्चात् बल प्रयोग में भारतीय सशस्त्र सेवाओं के सामने उभरी चुनौतियां पहले की तुलना में कम नहीं थीं। जहां तक पाकिस्तान का संबंध है, परमाणु हथियारों के उपयोग को रोकने के लिए यह एक अनिवार्यता है, क्योंकि पाकिस्तान में रणनीतिक हस्तक्षेप के प्रति संवेदनशीलता की भावना है। भौगोलिक गहराई की कमी, जोखिम लेने की प्रवृत्ति और भारतीय क्षेत्र के अंदर गहराई तक हमला करने की क्षमता आदि से प्रेरित यह प्रत्यक्ष है कि इसे आसानी से परमाणु उपयोग के लिए प्रेरित किया जा सकता है। नई दिल्ली के सामने चुनौती यह रही है कि परमाणु हथियारों के आधार पर इसके पारंपरिक सकारात्मक पक्षों का लाभ कैसे उठाया जाए।

शीत युद्ध के अंत तक दुनिया में जो गहरा बदलाव आया है, उसने अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मूलभूत पुनर्गठन के लिए विचार को प्रोत्साहित किया है। वैचारिक प्रतिद्वंद्विता के अंत ने एक बेहतर सुरक्षित वातावरण विकसित करने का एक उद्देश्यपूर्ण अवसर प्रदान किया है। हालाँकि,

जैसे–जैसे नया वैश्विक संतुलन स्थापित हो गया है, चारों ओर बहुत अधिक अनिश्चितता विकसित हुई है।

भारत का सुरक्षा दृष्टिकोण यह प्रदर्शित करता है कि इसकी घरेलू अनिवार्यताओं, बलों के क्षेत्रीय संतुलन और वैश्विक चुनौतियों की परस्पर क्रिया द्वारा नियंत्रित होंगे जो इसकी भूमिका और क्षमताओं को प्रभावित करते हैं। भारत अपने आकार, संसाधन, क्षमता और रणनीतिक स्थिति के साथ एक क्षेत्रीय प्रभावशाली के रूप में तेजी से देखा जा रहा है जो नई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में सत्ता के केंद्र के रूप में उभरने की दहलीज पर खड़ा है। इसकी विश्वसनीय लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली की उतनी ही मान्यता है, जितनी कि इसके विशाल आर्थिक संसाधनों और राजनीतिक दबदबे की संभावना।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के एक व्यापक ढांचे को इसकी क्षेत्रीय अखंडता और राष्ट्रीय एकता के लिए न केवल बाहरी खतरों बल्कि आंतरिक चुनौतियों के संदर्भ में भी सैन्य और गैर–सैन्य आयामों का संज्ञान महत्वपूर्ण है। एक राष्ट्र के लिए खतरा उतना ही बाहरी आक्रमण से उत्पन्न होता है जितना कि आंतरिक संघर्ष से किन्तु कई बार आंतरिक कारक किसी भी बाहरी संकट की तुलना में राष्ट्रीय सुरक्षा को अधिक गंभीर रूप से नष्ट कर सकते हैं। इस प्रकार राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक एकता और आर्थिक विकास पर आधारित राष्ट्रीय शक्ति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के भविष्य के लिए केंद्रीय बनी रहेगी। राष्ट्रीय सुरक्षा में विदेशी हस्तक्षेप एवं अनैतिक दखल सदैव समस्या का आधार रहता है। भारत के पड़ोसी देशो से सम्बंध तथा इससे देख की राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव महत्वपूर्ण करक है जो समसामयिक परिप्रेक्ष में महत्वूर्ण बन गया है।

1980 के दशक में सोवियत समर्थित लोकतांत्रिक गणराज्य अफगानिस्तान को मान्यता देने वाला भारत गणराज्य एकमात्र दक्षिण एशियाई देश था, हालांकि 1990 के दशक के अफगान गृहयुद्ध और तालिबान सरकार के दौरान संबंध कम हो गए थे। भारत ने तालिबान को उखाड़ फेंकने में सहायता की और अफगानिस्तान के पूर्व इस्लामी गणराज्य को मानवीय और पुनर्निर्माण सहायता का सबसे बड़ा क्षेत्रीय प्रदाता बन गया था।

इसके अतिरिक्त, 2002 में अफगानिस्तान के खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका की एक तरफा आक्रामकता और 2003 में इराक ने इस तथ्य को स्थापित किया है कि विश्व शक्ति संरचना प्रकृ ति में आधिपत्य है और कोई भी राज्य आधिपत्य वाली दुनिया में सुरक्षित नहीं है। यदि वह देश आधिपत्य की इच्छा के अनुसार काम नहीं कर रहा है, तो आधिपत्य की शक्ति किसी देश पर एक बहाने या किसी अन्य समय पर हमला कर सकती है। पिछले साल, 2020 के

अफगानिस्तान सम्मेलन के दौरान, भारत के विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर ने कहा था कि अफगानिस्तान का कोई भी हिस्सा "400 से अधिक परियोजनाओं" से "अछूता" नहीं था, जिसे भारत ने देश के सभी 34 प्रांतों में शुरू किया था।

दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार भी पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ गया था और 2019 एवं 2020 में $1-5 बिलियन तक पहुंच गया था। भारत, जो तालिबान को अपने कट्टर पाकिस्तान के हितकर्ता के रूप में देखता है, ने उत्तरी गठबंधन के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा था, जिसने 2001 में अमेरिका के नेतृत्व वाले नाटो बलों की मदद से अफगान सशस्त्र समूह को हराया था। अमेरिका स्थित विल्सन सेंटर में एशिया कार्यक्रम के उप निदेशक माइकल कुगेलमैन ने कहा, "भारत अफगानिस्तान के संदर्भ में काबुल के सबसे करीबी क्षेत्रीय साझेदार से क्षेत्र के सबसे वंचित खिलाड़ियों में से एक बन गया है।"

परन्तु वर्तमान में हो रहे परिवर्तन इस शक्ति व्यवस्था में नये बदलाव लेकर आये है क्योंकि विश्लेषकों का कहना है कि कुछ समय पहले तालिबान की सत्ता में वापसी ने भारत के लिए एक बड़ा कूटनीतिक झटका दिया है, दक्षिण एशियाई देश अब इस क्षेत्र के "सबसे वंचित" खिलाड़ियों में से एक है । हफ्तों के भीतर, तालिबान ने एक आश्चर्यजनक सैन्य परिवर्तन में देश को अपने कब्जे में ले लिया, क्योंकि अमेरिका के नेतृत्व वाली विदेशी सेनाएं 20 वर्षों के बाद बाहर निकल रही थीं – देश के सबसे लंबे विदेशी युद्ध को समाप्त करना ।

अफगानिस्तान में भारत के पुनर्निर्माण प्रयासों के तहत भारतीय विभिन्न निर्माण परियोजनाओं में काम कर रहे हैं। पाकिस्तान का आरोप है कि भारत की विदेशी खुफिया एजेंसी आर एंड ए डब्लू पाकिस्तान को बदनाम करने और विद्रोहियों को प्रशिक्षित करने और समर्थन देने के लिए छिपकर काम कर रही है। इन घटनाओं न दक्षिण एशिया के लोगों सहित पूरी मानव सभ्यता के लिए असुरक्षा की भावना पैदा की। वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर मौजूद सुरक्षा परिदृश्य के दूरगामी निहितार्थ हैं अफगानिस्तान में तालिबान सरकार की घोषणा से भारत के साथ आतंकवादी समूह के संबंध और दोनों देशां के बीच संबंधों का भविष्य सुर्खियों में है । सूत्रों के मुताबिक, भारत के साथ संबंधों को लेकर तालिबान के भीतर कुछ मतभेद हो सकते हैं। माना जाता है कि हक्कानी गुट, विशेष रूप से, अलग तरह से सोच रहा है। इसके चेहरे पर, अब्बास स्टानिकजई और हक्कानी गुट का प्रतिनिधित्व करने वाले अनस हक्कानी दोनों ने कहा है कि तालिबान भारत के साथ अच्छे संबंध चाहता है हालांकि अनस हक्कानी ने काबुल और दिल्ली में अपने संपर्कों से कहा है कि तालिबान सरकार बनने और उसके मजबूत होने के कुछ हफ्ते बाद ही भारत के साथ बातचीत को आगे बढाया जाएगा. सूत्रों के मुताबिक अनस हक्कानी ने अपने संपर्कों से भी कहा है कि जब वे बातचीत के लिए बैठेंगे तो देखेंगे कि भारत के हालात

क्या हैं. "और परिस्थितियाँ केवल भारत की ही नहीं होंगी, बल्कि हमारे पास भी परिस्थितियाँ होंगी," उन्होंने कहा है। हक्कानी गुट के माध्यम से अफगानिस्तान और तालिबान के भीतर अपना एजेंडा चलाने की पाकिस्तान की कोशिश कोई रहस्य नहीं रही है। यही वजह है कि तालिबान का हक्कानी धड़ा अपनी सुविधा और शर्तों के मुताबिक भारत के साथ बातचीत को आगे बढ़ाना चाहता है। इस विभाजन का प्रभाव – भौगोलिक और कबायली मतभेदों से जटिल – भारत के साथ तालिबान की वार्ता की राह आसान नहीं बनाएगा। अफगानिस्तान में अपने हितों को देखते हुए, भारत के तालिबान को पूरी तरह से दूर करने में सक्षम होने की संभावना नहीं है।

हालांकि, अनस हक्कानी ने अपने संपर्कों के जरिए शर्तों का खुलासा नहीं किया। लेकिन कश्मीर का मुद्दा तालिबान के एजेंडे में नहीं है, अनस हक्कानी ने अपने साक्षात्कारों में घोषित किया है। एक दिन बाद, तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने बीबीसी को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि उसे "कश्मीरी लोगों के लिए हमारी आवाज़ उठाने का अधिकार है"। इससे तालिबान की मंशा पर संदेह पैदा होता है।

निष्कर्ष

आतंकवादी और पड़ोसियों और गैर–राज्य अभिनेताओं सहित विभिन्न स्रोतों से भारी सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए, भारत को वैश्विक और क्षेत्रीय स्तरों पर उन्हें संबोधित करने के लिए एक अधिक संरचित और समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। उसके लिए, उसे न केवल अपने नौसैनिकों को आधुनिक बनाने, अद्यतन करने और मजबूत करने के लिए, बल्कि रक्षा खरीद और नीति कार्यान्वयन पर अपने निर्णय लेने में खामियों को दूर करने के लिए एक दीघकालिक रणनीति तैयार करने की आवश्यकता होगी। हिंद महासागर में भारत की सुरक्षा चिंताओं के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया और इसके समुद्री पड़ोस जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ घनिष्ठ रणनीतिक सहयोग में दीर्घकालिक समुद्री नीति का अनुसरण करने की माग है।

खासकर जब अमेरिका समेत दुनिया के तमाम ताकतवर देश तालिबान के साथ सहयोग और समन्वय की बात कर रहे हैं, तो भारत समूह के विरोध का झंडा लेकर अकेले नहीं चल सकता। तालिबान से चीन पहले ही हाथ मिला चुका है । रूस भी समूह के साथ खड़ा नजर आ रहा है । यह रणनीतिक रूप से अधिक महत्वपूर्ण है कि भारत भी अफगानिस्तान में अपनी उपस्थिति समाप्त न करे। तालिबान और भारत के बीच संबंध, जिसने हमेशा समूह को एक आतंकवादी संगठन माना है और अपनी पिछली सरकार को कभी मान्यता नहीं दी है, अकेले भारत के लाभ के लिए नहीं होने जा रहा है, तालिबान को भी इसमें एक बड़ा फायदा दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

- https://www.ndtv.com/blog/blog-taliban-wants-friendly-ties-with-india-but-theres-a-catch-2529163
- https://www.aljazeera.com/news/2021/8/29/what-does-the-talibans-takeover-of-afghanistan-mean-for-india
- http://www.idsa-india.org/an-dec-1.html

♦♦♦♦♦

8

राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी की नई विदेश नीतिः नियमितता, लोकप्रियता एवं विश्वसनीयता

काजल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत की राष्ट्रीय पहचान व सुरक्षा को लेकर सर्वसम्मति 1990 के दशक से धीरे–धीरे खंडित हो रही है, मुख्यतः 1998 में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने के पश्चात। भारतीय जनता पार्टी ने न केवल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को प्रमुख राजनीतिक दल के स्थान से विस्थापित किया है बल्कि भारत की सुरक्षा के विषय में जनता की सोच को परिवर्तित करने का भी कार्य किया है। 2014 के लोकनीति सर्वेक्षण में, 31 प्रतिशत लोगों ने भाजपा को राष्ट्रीय सुरक्षा पर सबसे अधिक विश्वसनीय दल के रूप में नामित किया, जबकि केवल 19 प्रतिशत ने कांग्रेस के पक्ष में अपना मत दिया। इस लेख का मुख्य उद्देश्य विदेश नीति व सुरक्षा के विषय में जनता का भाजपा के प्रति विश्वास का विश्लेषण करना है। साथ ही, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की विदेश नीति में आए परिवर्तन का मूल्यांकन करना है।

सुरक्षा के संदर्भ में भाजपा विदेश नीति की लोकप्रियता

सुरक्षा के विषय में भाजपा के प्रति जनता के विश्वास का युग निश्चित रूप से 1998 के पोखरण–2 परमाणु परीक्षणों और 1999 के कारगिल युद्ध के साथ प्रारंभ हुआ था। जिसके पश्चात बालाकोट के हवाई हमले ने भाजपा के राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति उद्देश्य को और अधिक स्पष्ट कर दिया। सुरक्षा के विषय में जनता की धारणा या विश्वास एक दिन की प्रक्रिया नहीं है अपितु यह राजनीतिक दल के अन्तराष्ट्रीय विषयों पर कठोरता या नरमी से निर्णय लेने और नीति बनाने से होता है। यदि भारत की सुरक्षा के संबंध में सबसे बड़े अन्तराष्ट्रीय संकट का विश्लेषण करे तो वर्षों से आतंकवाद व पाकिस्तान की भूमिका दो मुख्य विषय रहे हैं। जिसका कठोरता से प्रबंधन और नियंत्रण भाजपा की विदेश नीति में देखा गया है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि कांग्रेस ने इन विषयों पर कभी ध्यान नहीं दिया या निर्णय नहीं लिया। इंदिरा गांधी के कार्यकाल में भारत 1971 का युद्ध पाकिस्तान के विरुद्ध जीत था। परंतु इसके अतिरिक्त

कठोरता से इन विषयों पर कांग्रेस द्वारा कोई निर्णय नहीं लिए गए। जिसका उदाहरण 26/11 के मुंबई हमले के रूप में देखा जा सकता है।

1990 के दशक से भाजपा को अन्तराष्ट्रीय सुरक्षा के विषय में सबसे कठोर दल के रूप में पहचान प्राप्त हुई है जिसके मुख्यतः चार बड़े कारण हैं:

- कांग्रेस के विषय में मुस्लिम मतदाताओं को लुभाने का एक विचार हमेशा से प्रचलित रहा जिसको आगे चलकर नरेंद्र मोदी ने "वोट भक्ति" का नाम दिया। 26/11 के हमले पर कांग्रेस का कठोर निर्णय न लेना और बालाकोट हमले के पश्चात भाजपा के हवाई हमले के निर्णय की तुलना इस संबंध में महत्वपूर्ण है।
- भाजपा का राष्ट्रीय सुरक्षा का लेकर विचार हमेशा प्रबल व कठोर रहा जबकि कांग्रेस द्वारा आतंकवाद, अलगाववाद और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को लेकर कोई स्पष्ट विचार या कठोर निर्णय सामने नहीं आया। जहां विषय मुस्लिम मतदाता का रहा वहाँ कांग्रेस की नीति कठोर नहीं रही।
- नरसिम्हा राव और आई के गुजराल के कार्यकाल में परमाणु परीक्षण के विषय में आर्थिक प्रतिबंधों के कारण कोई जोखिम नहीं उठाया गया जबकि सत्ता में आते ही अटल बिहारी वाजपायी ने भारत को परमाणु परीक्षण के साथ एक शक्ति प्रदान की, जो भारत की अंतराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूण और प्रबल निर्णय था। समान रूप से, अनुच्छेद 370 को हटाने और हवाई हमले का निर्णय प्रबल और कठोर था, जिसने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भाजपा के प्रति विश्वसनीयता को बढ़ाया।
- भारत की सुरक्षा को लेकर अन्य एक बड़ा संकट माओवाद रहा है जिसके प्रति कांग्रेस ने कभी कठारता से निर्णय नहीं लिया। जिसके चलते कांग्रेस ने आतंकवाद निरोधक अधिनियम (पोटा) को निरस्त कर दिया।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व मे भाजपा की नई अन्तराष्ट्रीय नीति व सुरक्षा

2014 के पश्चात भारत की विदेश नीति में बहुत–से परिवर्तन आए हैं। नरेंद्र मोदी के कार्यकाल मं भाजपा ने केवल आतंकवाद को ही महत्ता नहीं दी अपितु आर्थिक सुरक्षा के विषय पर भी ध्यान केंद्रित किया है। प्रारम्भिक पाँच वर्षों में नरेंद्र मोदी द्वारा विदेश दौरे और विश्व–भर के नेताओं के साथ भेंट का कार्य किया गया। जिसके लिए उनको बौद्धिक जगत में आलोचना का सामना भी करना पड़ा। परंतु कुछ ही वर्षों में उन विदेश दौरों के सकारात्मक परिणाम सामने आए जो निम्नलिखित हैं:

- पहला, साहसिक कदम सऊदी अरब और संयुक्त अरब एमीरात तक भारत की पहुँच है। वर्षों तक भारत की विदेश नीति में फारस की खाड़ी को वह महत्व नहीं मिला जो उसे मिलना चाहिए था। क्योंकि धार्मिक कारणों से कई देशों को पाकिस्तान के समीप देखा गया, इसलिए मिस्र और इराक के अतिरिक्त अन्य देश भारत की प्राथमिकताओं से वंछित रह गए। हालांकि अरब जगत में राजनीतिक परिवर्तन को देखते हुए नरेंद्र मोदी ने अप्रत्याशित रूप से साउदी अरब और संयुक्त अरब एमीरात को उस प्रकार से सम्मिलित किया जिससे राजनीतिक और आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके।
- इसी प्रकार जापान के साथ भारत के संबंधों में भी नवीनीकरण देखा गया है। टोक्यो के साथ साझीदारी का प्रारंभ मनमोहन सिंह के कार्यकाल मे हुआ परंतु नरेंद्र मोदी और शिंजो आबे के मध्य घनिष्ट व्यक्तिगत संबंध के कारण जापान और भारत के संबंधों के मध्य तेजी आई है। टोक्यो भारत में अपनी आर्थिक भागीदारी बढ़ाने, सुरक्षा के लिए सहयोग का प्रयास कर रहा है। जापान भारत को चीन को संतुलित करने में एक पूरक भागीदार के रूप में दिख रहा है।
- नरेंद्र मोदी ने "लुक ईस्ट" नीति को "ऐक्ट ईस्ट" नीति में परिवर्तित किया, जिसका उद्देश्य बेहतर बुनियादी ढांचे, व्यापार और क्षेत्रीय संस्थानों के माध्यम से भारत को पूर्वी एशिया से जोड़ना है। ऐक्ट ईस्ट नीति को बहुत–से आर्थिक विश्लेषकों ने मोदी की सबसे बड़ी विदेश नीति बताया, जो आर्थिक संबंधों और सुरक्षा नीति को समान महत्व देती है। परिणामस्वरूप, भारत मुख्य रूप से दक्षिण चीन सागर में मुक्त समुद्री नेवीगेशन और समुद्री सुरक्षा के लिए एक नियम आधारित आदेश के विषय में अधिक मुखर रहा है और साथ ही रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मलक्का में स्थित बंदरगाह के निर्माण के लिए इंडोनेशिया के साथ एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए हैं।
- हाल ही में, स्वतंत्रता के पश्चात 75 वर्ष में पहली बार भारत के प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की बैठक में समुद्री सुरक्षा बढ़ाने की एक उच्च स्तरीय विमर्श की अध्यक्षता की है। जो नई अन्तराष्ट्रीय नीतियों का परिणाम है।

कुल मिलाकर, भाजपा के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति दो भाग में विभाजित हैः– पहला, 2014 से पूर्व, जिसमे भाजपा ने सुरक्षा के संदर्भ में केवल आतंकवाद और पाकिस्तान की गतिविधियों के विरुद्ध सैन्य बल पर अपना ध्यान केंद्रित किया। परंतु 2014 के पश्चात भाजपा ने अपनी विदेश नीति में परिवर्तन कर सैन्य बल के साथ आर्थिक सुरक्षा और मित्रता को भी सम्मिलित किया। जिसमे नरेंद्र मोदी ने विभिन्न प्रकार से भारत के राजनयिक दृष्टिकोण में परिवर्तन किया। चाहे वह एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव का सामना करने के लिए पश्चिम से, मुख्यतः अमरीका से अपने संबंधों को पुनः स्थापित करना हो, पाकिस्तान के कथित आतंकवाद

के विरुद्ध कठोर और आक्रामक निर्णय लेना हो, पूव और दक्षिण पूर्व एशिया से संबंधों को बढ़ाना हो या मध्य पूर्व अरब देशों से मजबूत गठबंधन का निर्माण करना हो।

संदर्भ सूचीः

- JAIN, S. (2014). Narendra Modi: Striving to be a pillar in a multipolar world. *World Affairs: The Journal of International Issues*, *18*(4), 10–25. https://www.jstor.org/stable/48505119

- SAHOO, P. (2016). A History of India's Neighbourhood Policy. *World Affairs: The Journal of International Issues*, *20*(3), 66–81. https://www.jstor.org/stable/48505294

- https://www.lokniti.org/media/PDF-upload/1536130357_23397100_download_report.pdf

- https://economictimes.indiatimes.com/news/elections/lok-sabha/india/congress-pursues-vote-bhakti-we-have-desh-bhakti-pm-modi/articleshow/68971238.cms?from=mdr

- https://www.financialexpress.com/india-news/what-is-act-east-policy-and-how-narendra-modis-three-nation-visit-is-strengthening-it/1187081/

♦♦♦♦♦

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007